सरकारी अस्पताल

मुकेश कुमार शर्मा
जे.ई. (वरिष्ठ ग्रेड)

जिसकी व्यवस्था हो बदहाल
दवाइयों का जहाँ पड़ा हो अकाल
जहाँ के डाक्टरों का धर्म हो
मरीज को किसी तरह देना टाल
उसे कहते हैं, सरकारी अस्पताल ।
एक दिन एक सीरियस मरीज
आपातकालीन विंग में आया
दो तीन घन्टे छानबीन की
डाक्टर का कहीं पता नहीं पाया
कांफी देर बाद कम्पाउन्डर के दर्शन हुए
कम्पाउन्डर डाक्टर से कम नहीं नजर आ रहा था
आपातकाल में ड्यूटी होते हुए भी
बाजार से चाय पीकर आ रहा था
हमने कहा, भैया डाक्टर साहब कब आयेंगें?
वह बोला डाक्टर साहब प्राइवेट नर्सिग होम गये हैं
अपनी बीबी को भी संग ले गये हैं
उधर से होटल में खाना खाते हुए आयेंगे
पता नहीं कितने घन्टे लग जायेंगे
हमने कहा, आपाताकाल की ड्यूटी
होटल में खाना खाकर निभा रहे हैं
घर में खाना खाने की फुर्सत नहीं होती
कसम खाने के लिए रास्ता बना रहे हैं
मरीज जिन्दगी व मौत के बीच झूल रहा था
डाक्टर का न आना सभी को सूल रहा था
बार-बार सब घड़ी को देख रहे थे
मरीज के घर वाले किस्मत को कोस रहे थे
तभी डाक्टर की गाड़ी की आवाज आयी
बने भाग्य की दी दुहाई
डॉक्टर ने आते-आते फिर भी
आधा घन्टा लगा दिया
इतने में मरीज हो गया बेहाल
डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया तत्काल
हमने डाक्टर से डेथ सर्टीफिकेट के लिए कहाँ
तभी मरीज कुछ हिलने लगा ।
बोला मैं मरा नहीं हूँ
डाक्टर ने कहा, चुप डाक्टर मैं हूँ, या आप
मेडीकल सांइस आपने या मैने पढ़ी हैं
मैं डेथ सर्टीफिकेट पर साइन कर चुका हूँ
तुम्हें जीने की पड़ी हैं ।मुझे झूठा बनवाओगे ।
इससे पहले तुम्हारी कोई सुने
पोस्टमार्टम घर भिजवा दिये जाओगे
कुछ ही क्षणों में तुम्हारा पोस्टमार्टम हो जायेगा
फिर देखता हूँ तुम्हें कौन जीवित बतलायेगा ?
आज डाक्टर जिलाने के बजाय
मारने का धर्म निभा रहे हैं
मरे हुए से भी पोस्टमार्टम के नाम पर
सुविधा शुल्क उघा रहे हैं ।
यही हाल रहा तो डाक्टर और यमराज में
कोई अन्तर नहीं रह जायेगा,सरकारी डाक्टर को देखकर
मरीज जिन्दा ही मर जायेगा
अपना इलाज कराने कोई भूलकर भी
सरकारी अस्पताल नहीं जायेगा ।।

***